Model: Duastro-Manglik-Calculator

SrNo: 115-120-105-3261 / 1012 Date: 19/02/2025

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**01/01/1999**
दिन	शुक्रवार
जन्म समय	**13:01:00 घंटे**
इष्ट	14:27:13 घटी
स्थान	**.Delhi**
राज्य	Delhi
देश	India

अक्षांश	28:37:00 उत्तर
रेखांश	77:12:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:21:12 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	12:39:48 घंटे
वेलान्तर	-00:03:19 घंटे
साम्पातिक काल	19:21:52 घंटे
सूर्योदय	07:14:06 घंटे
सूर्यास्त	17:35:11 घंटे
दिनमान	10:21:05 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	शिशिर
सूर्य के अंश	16:35:04 धनु
लग्न के अंश	04:42:27 मेष

चैत्रादि संवत / शक	2055 / 1920
मास	पौष
पक्ष	शुक्ल
सूर्योदय कालीन तिथि	14
तिथि समाप्ति काल	11:01:20
जन्म तिथि	15
सूर्योदय कालीन नक्षत्र	मृगशिरा
नक्षत्र समाप्ति काल	14:34:43 घंटे
जन्म नक्षत्र	मृगशिरा
सूर्योदय कालीन योग	शुक्ल
योग समाप्ति काल	09:29:25 घंटे
जन्म योग	ब्रह्म
सूर्योदय कालीन करण	वणिज
करण समाप्ति काल	11:01:20 घंटे
जन्म करण	विष्टि

अवकहड़ा चक्र

लग्न–लग्नाधिपति	मेष – मंगल
राशि–स्वामी	**मिथुन – बुध**
नक्षत्र–चरण	**मृगशिरा – 4**
नक्षत्र स्वामी	मंगल
योग	ब्रह्म
करण	विष्टि
गण	देव
योनि	सर्प
नाड़ी	मध्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मार्जार
युँजा	पूर्व
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	की–किशोर
पाया(राशि–नक्षत्र)	ताम्र – स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मकर

घात चक्र

मास	आषाढ़
तिथि	2-7-12
दिन	सोमवार
नक्षत्र	स्वाति
योग	परिघ
करण	कौलव
प्रहर	3
वर्ग	मूषक
लग्न	कर्क
सूर्य	मीन
चन्द्र	कुम्भ
मंगल	मेष
बुध	मकर
गुरु	वृष
शुक्र	मिथुन
शनि	कुम्भ
राहु	कर्क

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मेष	04:42:27	481:13:30	अश्विनी	2	1	मंगल	केतु	चंद्र	–––
सूर्य			धनु	16:35:04	01:01:08	पूर्वाषाढ़ा	1	20	गुरु	शुक्र	चंद्र	मित्र राशि
चंद्र			मिथु	05:42:56	14:37:14	मृगशिरा	4	5	बुध	मंगल	चंद्र	मित्र राशि
मंगल			कन्या	24:41:49	00:29:40	चित्रा	1	14	बुध	मंगल	राहु	शत्रु राशि
बुध			वृश्चि	27:52:03	01:23:59	ज्येष्ठा	4	18	मंगल	बुध	गुरु	सम राशि
गुरु			कुंभ	28:08:46	00:08:50	पू०भाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	शुक्र	सम राशि
शुक्र			मक	01:56:06	01:15:13	उत्तराषाढ़ा	2	21	शनि	सूर्य	गुरु	मित्र राशि
शनि			मेष	02:56:02	00:00:18	अश्विनी	1	1	मंगल	केतु	शुक्र	नीच राशि
राहु	व		कर्क	28:59:17	00:06:42	आश्लेषा	4	9	चंद्र	बुध	शनि	शत्रु राशि
केतु	व		मक	28:59:17	00:06:42	धनिष्ठा	2	23	शनि	मंगल	शनि	शत्रु राशि
हर्ष			मक	17:07:59	00:03:08	श्रवण	3	22	शनि	चंद्र	शनि	–––
नेप			मक	07:13:47	00:02:10	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	केतु	–––
प्लूटो			वृश्चि	15:17:05	00:02:05	अनुराधा	4	17	मंगल	शनि	गुरु	–––
दशम भाव			धनु	25:03:22	--	पूर्वाषाढ़ा	--	20	गुरु	शुक्र	बुध	--

व – वक्री स – स्थिर
अ – अस्त पू – पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट
चित्रपक्षीय अयनांश : 23:50:25

लग्न–चलित

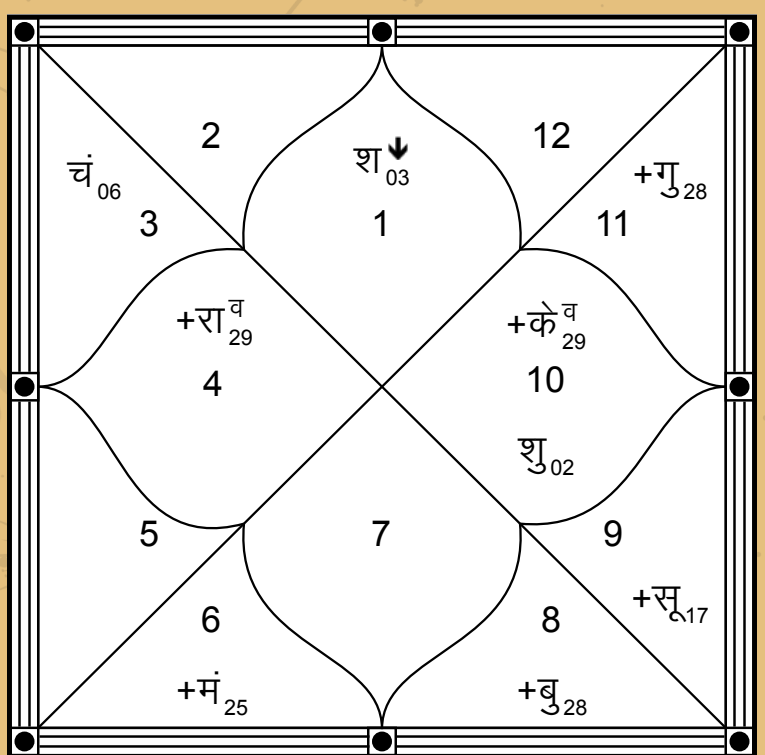

चन्द्र कुंडली

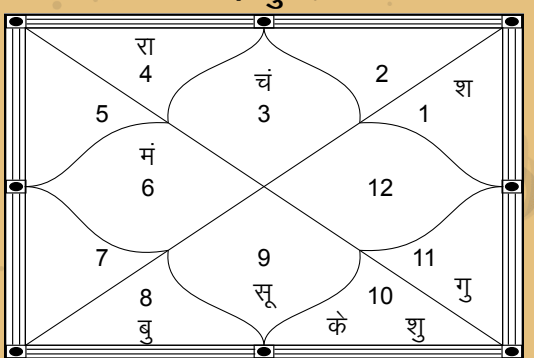

नवमांश कुंडली

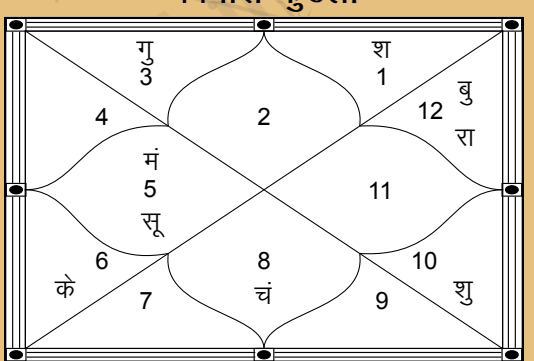

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर–कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति चन्द्रमा से चतुर्थ भाव में है। अतः आप चन्द्र कुंडली से मांगलिक है। चूंकि यह योग भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में आवश्यक सुख संसाधनों तथा चल एवं अचल सम्पति को परिश्रम पूर्वक अर्जित करेंगे। शारीरिक रूप से आप सामान्यतया स्वस्थ ही रहेंगे तथा मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आपके विवाह में किंचित विलम्ब होगा तथा विवाह से पूर्व वार्ताओं में भी रूकावटें उत्पन्न होगी परन्तु अन्ततः इस में सफलता मिल ही जाएगी। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा लेकिन इसका दाम्पत्य जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा तथा सुख पूर्वक आप अपना समय व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे।

चतुर्थ भावस्थ मंगल के प्रभाव से आप जीवन में भौतिक सुख संसाधनों को परिश्रम पूर्वक अर्जित करेंगे। इसकी सप्तम भाव पर दृष्टि से आपकी पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में उग्रता रहेगी लेकिन सुखी दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप कार्य क्षेत्र में परिश्रमपूर्वक नित्य उन्नतिशील रहेंगे। साथ ही किसी महत्वपूर्ण पद की प्राप्ति हो सकती है तथा समाज से इच्छित मान सम्मान अर्जित करने में भी आपको सफलता मिलेगी। एकादश भाव पर दृष्टि के प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति सामान्यतया अनुकूल रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होता रहेगा। इसके अतिरिक्त परिश्रम पूर्वक आय स्रोतों की वृद्धि करने में भी आप समर्थ रहेंगे।

मंगल की शुभता में वृद्धि करने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे आपका परस्पर मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे

पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इस दोष के भंग होने पर आपको इच्छित मात्रा में सांसारिक सुख संसाधनों की प्राप्ति होगी तथा चल एवं अचल सम्पति को बनाने में भी आप समर्थ रहेंगे। साथ ही सर्वत्र सुख सौभाग्य एवं ऐश्वर्य से युक्त होकर आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा। आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी एवं जीवन में एक दूसरे को सुख तथा सहयोग प्रदान करके आप आत्मिक सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।